Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2023 SHISRRJ | Volume 6 | Issue 3 | ISSN : 2581- 6306

अध्यापक शिक्षा : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में

डॉ कैलाश चन्द मीणा

सहायक आचार्य, शिक्षापीठ, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय , नई दिल्ली।

Article Info

Publication Issue :
May-June-2023
Volume 6, Issue 3

Page Number : 64-68

Article History
Received : 20 May 2023
Published : 30 June 2023

सारांश :- भारतीय संस्कृति में गुरु का स्थान बहुत पवित्र और ऊंचे दर्जे का माना गया है, गुरु माता पिता यहां तक कि ईश्वर से भी ज्यादा आदरणीय विश्वसनीय तथा सम्मानीय माना जाता है। गुरु श्रद्धा, आस्था और समर्पण का पर्याय है। 21वीं सदी के शिक्षार्थियों की नई पीढ़ी गूगल के गर्भ से निकली है। जो बहुत सी ऐसी सूचनाओं से सराबोर है जिनसे आज का टीचर भी शायद न हो। इस पीढ़ी को रूढ़ीवादी शिक्षक नहीं संभाल पायेगें। ये नए जमाने के नौजवान है। इस जनरेशन को अपना एक संवाद सहयोगी चाहिए। जो उनकी बाते सुन सके। राष्ट्रीय शिक्षा नीति –2020 में इन्ही सभी बिंदुओं पर चर्चा की गई है।

बीज बिंदु :- अध्यापक , राष्ट्रीय , शिक्षानीति , समग्र विकास,दृष्टिकोण, रचनात्मकता इत्यादि ।

प्रस्तावना :- **गुरु** :-**पारंपरिक अर्थ में** :- जिसमें गांभीर्य हो ।

भागवत पुराण में :-कृष्ण ने उद्धव को तटस्थ तपस्वी (अवधूत) के चौबीस गुरुओं के बारे में बताया था । जिसके अनुसार गुरु वह है जो तपस्वी में अंतर्दृष्टि पैदा करता है ।

स्कंद पुराण में :-गुरु गीता में शिव ने पार्वती को बताया कि गुरु के बिना किसी व्यक्ति के लिए वेद समझना असंभव है ।

कृष्ण के अनुसार :-**जो** मनुष्य की स्वतंत्रता को स्वीकार कर उसे स्वतंत्र बनने में सक्षम बनाता है ।

शिव के अनुसार :-हमें गुरु पर निर्भर रहना आवश्यक है ।

गुरु गीता के अनुसार। :-गुरु पिता या माता यहां तक कि देवताओं के समान या उनसे भी श्रेष्ठ हैं ।

गीता के अनुसार :-**श्रद्धावान लभते ज्ञानम तत्पर: संयतेंद्रिय** --गुरु श्रद्धा, आस्था और समर्पण का पर्याय है।

पुराणों के अनुसार :-ब्रहस्पति के बिना देव युद्ध नहीं जीत सकते थे और शुक्र के बिना असुर पुनर्जीवित नही हो सकते थे ।

भारतीय संस्कृति में :-जिसे आत्मा और अविनाशी तत्त्व का बोध हो जाए ।गुरु प्रकाश स्तंभ है । गुरु पवित्रता का प्रवाह है नैतिकता का निर्वाह है ।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

विश्वविख्यात वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन के अनुसार :-गुरु वह है जो रचनात्मक क्रियाओं में अपने ज्ञान से हमारे अंत:करण में आनंद उत्पन्न करता है । इस आनंद की अनुभूति में आत्मसात किए गए विषय को शिष्य जीवन पर्यंत नहीं भूलता ।

विश्व विजेता सिकंदर के अनुसार :-अच्छे रहन–सहन के लिए मैं अपने पिता का ऋणी हूं लेकिन अच्छी तरह से रह पाने के लिए अपने गुरु का ।

बोलचाल की भाषा में :-हम उस्ताद , अध्यापक , आचार्य, पंडित , ज्ञानी , साधु , मुनि , तपस्वी, पुरोहित ,शिक्षक या गुरु आदि कोई भी शब्द इस्तेमाल कर सकते हैं ।

आजकल :-अधिकतर भारतीय अध्यात्मिक नेता गुरु कहलाते हैं एक नई शब्द व्युत्पत्ति लोकप्रिय बन गई है जैसे – जो हमें अंधकार से प्रकाश तक ले जाता है ।

प्रौद्योगिकी का 21वीं सदी की शिक्षा में निर्णायक रोल है। टैक्नोलॉजी शैक्षिक क्षेत्र में क्रांतिकारी कारक बनकर उभरी है। प्रौद्योगिकी ने विषय शिक्षण से लेकर उसके उपयोग तक को नए आयाम दिए है। टैक्नोलॉजी न सिर्फ हमारी शक्ति और समय की सेविंग कर रही है। बल्कि क्षमता निर्माण में भी गुणात्मक इजाफा कर रही है।

गूगल के सुंदर पिचाई का यह कहना कि अगले 25 साल दो क्रांतिकारी तकनीक ही तय करेंगी। पहली आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और दूसरी क्वॉन्टम कंप्यूटिंग। ये दोनों मिलकर दुनियां को बदल देंगे। आर्टिफ़िशियल इंटेलीजेंस में पिचाई मानवता की बेहतरी देखते है कि यह भविष्य में इंसानों की तरह काम करने में हमारी सहयोगी बनेगी। विशेषत: समस्याओं के समाधान में यह दुनियां की हमसफर होगी। पर इसके दोनों ही पक्ष है।

टैक्नोलॉजी सबकी जरूरत :-टैक्नोलॉजी आज हर व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की जरुरत बन गई है। दुनियां में टैक्नोलॉजी का बढ़ता साम्राज्य कई खतरनाक ख्यालों को भी बड़ी मासूमियत से दबाता दिख रहा है। मन हार–थक कर मान ही लेता है कि तकनीक अब मनुष्य को गवर्न करने की हैसियत हासिल कर चुकी है।

बड़ी चिंता :-ऐसे में प्राथमिकताओं का प्रण करना सरल नहीं है। समाज की अपनी जरुरतें है तो राजनीति के अपने तकाजे है और बाजार तो खनन के ख्याल से कभी बाहर आता ही नहीं। ऐसे में सार्वभौमिकताओं को सहेजने वाली मानवता का दिग्दर्शन कराने वाली नई शैक्षिक संस्कृति कैसे उभरे? यह बड़ी चिंता है।

21वीं सदी के शिक्षार्थियों की नई पीढ़ी गूगल के गर्भ से निकली है। जो बहुत सी ऐसी सूचनाओं से सराबोर है जिनसे आज का टीचर भी शायद न हो। इस पीढ़ी को रूढ़ीवादी शिक्षक नहीं संभाल पायेगें। ये नए जमाने के नौजवान है। इस जनरेशन को अपना एक संवाद सहयोगी चाहिए। जो उनकी बाते सुन सके।

सोशल मीडिया का दौर :-जिन तनावों से वे तार–तार हो रहे है, उन्हें उनके समाधान दे सके। सोशल मीडिया के इस भयावह दौर में उन्हें सही दिशा में संचार और संवाद करने के गुर सिखा सके। छात्रों और उनके अभिभावकों के बीच मजबूत ब्रिजिंग कर सके। इस सब के लिए नए शिक्षक को नवाचार का नायक बनना होगा। नई धारणाओं–अवधारणाओं के बीच समाज को नव–जीवन मूल्यों से समायोजन सिखाना होगा।

परम्परा और आधुननता के बीच सेतु बनाने की सृजनात्मकता के वातावरण का वाहक बनना होगा। टैक्नोलॉजी ने हमारे घर में रहने–सोने से लेकर सड़क सुरक्षा तक को और विकास के आधार शिक्षा–व्यवस्था तक को निर्देशित और संचालित करना तय कर लिया है। टैक्नोलॉजी को जीवन उपयोगी और जनोपयोगी बनाने की दिशा में विशेष रुप से काम करने की जरुरत है।

अब इसके सिवा कोई विकल्प नहीं है। टैक्नोलॉजी से लैस नया शिक्षक नए माहौल में नव–संस्कृति के विकास में नायक की भूमिका में अपने गुरुत्तर दायित्व का निर्वहन करे। तभी भारतीय शिक्षक अपने सनातन सिंहासन गुरु–गोविन्द दोऊ खड़े.....पर अपने प्रथम स्थान को कायम रख सकेगा। विश्व कल्याण के दायित्व बोध और विश्वास से भरा अपने स्थान पर विराजमान रहेगा।

विशेष :-राम के कुलगुरु वशिष्ठ व गुरु विश्वामित्र थे ।अत्रि के पुत्र दत्तात्रेय को आदिगुरु मानते हैं। 2500 वर्ष पहले बुद्ध भी आदर्श गुरु थे इनके अनुसार छात्रों को स्वावलंबी होना चाहिए। गुरु शिक्षा और संस्कार दोनों का केंद्र बिंदु है भारतीय ज्ञान परंपरा के गुरु को पश्चिमी संस्कृति में गॉड इन ह्यूमन फॉर्म कहा गया है ।

गुरु के सानिध्य में जाने से जीवन की दिशा और दशा दोनों बदल जाती है सच्चिदानंद स्वरूप गुरु को लोगों के हृदय परिवर्तन के लिए ज्यादा उपदेश नहीं देने पड़ते उनकी उपस्थिति मात्र से व्यक्तित्व का रूपांतरण हो जाता है उनकी छोटी सी प्रेरणा हृदय परिवर्तन करने में सक्षम होती है गौतम बुद्ध को पाटलिपुत्र की नगरवधू आम्रपाली में मगध साम्राज्य में आतंक का पर्याय बन चुके अंगुलिमाल राक्षस का हृदय परिवर्तन करने में ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ी जब तथागत भोजन ग्रहण करने के प्रयोजन के लिए आम्रपाली के द्वार पर पहुंचे तो उनके आभामंडल के प्रभाव से इतनी रोमांचित व भाव विभोर हो गई कि महल त्यागकर बौद्ध भिक्षुणी बन गई अंगुलिमाल के सामने जैसे ही गौतम बुध के मुखारविंद से यह वाक्य निकला जब पेड़ की शाखा से तोड़े गए 10 पत्तों को तुम यथास्थिति में वापस नहीं जोड़ सकते तब भी अपने आप को ताकतवर समझते हो निर्दोष लोगों की हत्या करके अपने आप को बलशाली मानते हो इतना सुनते ही अंगुलिमाल के हाथ कांप उठे तलवार हाथ से छूट कर जमीन पर गिर पड़ी यही वह अद्भुत क्षण था जब अंगुलीमाल के हृदय का रूपांतरण हुआ और वह राक्षस से भिक्षुक बन गया ।उसी समय उसने सन्नयास ले लिया सद्गुरु की कृपा से प्रगति सुनिश्चित है। आध्यात्मिक मार्ग हो या सांसारिक जीवन में सद्गुरु की कृपा से प्रगति सुनिश्चित है।

आखिर सच्चा गुरु कौन है ? :-

जो हमे आध्यात्मिक सहायता सहित निरंतर पॉजिटिव एनर्जी देता रहे और जादुई ढंग से समस्याए हल करता रहे ।तथा अन्य मानते हैं कि गुरु में गांभीर्य हो और उनमें वह अंतर्दृष्टि पैदा कर उन्हें स्वावलंबी बनाएं। वायुपुराण में बताया गया है कि जो हमें सद्बुद्धि दे, हमें संसार में जीना सिखाए , सामाजिक बाधाओं को सहजता से पार करने की कला सिखाएं। गूढ़ से गूढ़ बातों को सरलता से समझाएं तथा समझाने का तरीका ऐसा हो कि वह बात हृदय में उतर जाए वही सच्चा गुरु है , वही आचार्य है ।

परंतु संसार का कोई भी कार्य ऐसा नहीं है जिसमें निपुणता प्राप्त करने के लिए हमें अध्यापक शिक्षक या गुरु की आवश्यकता नहीं पड़ती हो क्योंकि तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में कहा है कि

गुर बिन भव निधि तरई न कोई, जो बिरंचि संकर सम होई । -

श्रीरामचरितमानस 7 . 92 (ख) 3

अर्थात साधारण व्यक्ति की कौन कहे कोई ब्रह्मा और शिव जी के समान क्यों न हो वह भी गुरु की शरण के बिना भवसागर को पार नहीं कर सकता तथा रामचरितमानस के प्रारंभ में कहते हैं कि

बंधऊ गुरु पद कंज कृपा सिंधु नर रूप हरि ।

- **– मानस 1 आदि सोरठा 5**

अर्थात गुरु को कृपा का समुद्र और मनुष्य रूप में परमात्मा कहकर उनके चरण कमलों की वंदना करते हैं ।

भारतीय संस्कृति में गुरु का स्थान बहुत पवित्र और ऊंचे दर्जे का माना गया है गुरु माता पिता यहां तक कि ईश्वर से भी ज्यादा आदरणीय विश्वसनीय तथा सम्मानीय माना जाता है गुरु संस्कारों का सृजन करके शिष्यों को विकारों के विसर्जन के लिए प्रेरित करता है और शिष्य को पवित्र शुद्ध तथा योग्य बनाता है । कबीर दास जी ने गुरु के दर्जे के सम्मान में स्वयं भगवान से भी बढ़कर विश्वास व श्रद्धा जाने की बात कही है :-

गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागू पाय ।

बलिहारी गुरु आपने गोविंद दियो बताय ।

अर्थात महान अमेरिका मनोवैज्ञानिक **जी.बी वाटसन** ने अपनी कला कौशल का परिचय देते हुए कहा कि **तुम मुझे एक नवजात शिशु दे दो मैं उसे डॉक्टर बना सकता हूं** गुरु की कौशलता अनंत है, अतुलनीय है क्योंकि गुरु शब्द अपने आप में भारी होने की ओर इशारा करता है ज्ञान से संस्कारों से अनुभव से दोनों से समाज उसे बाहर लिए होते हैं तथा सब और से बाहरी बलवान नीतिज्ञ होते हैं गुरु हर सवाल का जवाब है आलोक का अवतरण शून्य से शिखर पर पहुंचाने वाला किंतु किमकर्तव्यविमुढ में दिशा प्रदान करने वाला भटकने पर अटकने न देने और शिष्य को डूबते हुए को तिनके का सहारा देने वाले ऐसा समर्थ सक्षम और अज्ञान का नाश करने वाला तेज रूप ब्रह्म गुरु होता है। सनातन धर्म में स्कंद पुराण के अंतर्गत गुरुगीता में गुरु को परिभाषित करके कहा गया है कि गु का अर्थ है अंधकार एवं रू का अर्थ है तेज प्रकाश अज्ञान का विनाश करने वाला तेज रूप ब्रह्म गुरु ही है।

इसी को आधार मानते हुए **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020** में भी अध्यापक शिक्षा गुणवत्ता विस्तार पर फोकस किया गया है यथा -

15 .1 अध्यापक शिक्षा से संबंधित अद्यतन प्रगति के साथ भारतीय मूल्यों भाषाओं ज्ञान लोकाचार और परंपराओं जनजाति परंपराओं के प्रति शिक्षक जागरूक रहें ।

15.2 सुप्रीम कोर्ट द्वारा गठित न्यायमूर्ति जेएस वर्मा आयोग(2012) के अनुसार अध्यापक शिक्षा के प्रति लेश मात्र गंभीरता से प्रयास नहीं कर रहे हैं , बल्कि ऊंचे दामों पर डिग्रियों को बेचा जा रहा है अत: इसी नियामक प्रणालियों में महत्वपूर्ण कार्रवाई के द्वारा पुनुरूधार की तत्काल आवश्यकता है जिससे शिक्षक शिक्षा प्रणाली में अखंडता विश्व नियता और उच्च गुणवत्ता को बहाल किया जा सके।

15.3 शिक्षण पैसे की प्रतिष्ठा बहाल करने के लिए निम्न स्तरीय और बेकार अध्यापक शिक्षा संस्थानों के खिलाफ उल्लंघन के लिए 1 वर्ष का समय दिए जाने के पश्चात कठोर कार्रवाई करने का अधिकार हो गया जो बुनियादी मांग को पूरा नहीं कर पा रहे हैं। 2030 तक केवल शैक्षिक रूप से सुदृढ़ और एकीकृत अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए।

15.4 बड़े-बड़े विश्वविद्यालयों में शिक्षक विभाग की स्थापना की जाएगी । सभी एकल शिक्षक संस्थानों को बहु विषयक संस्थानों के रूप में बदलने की आवश्यकता है क्योंकि उन्हें भी 4 वर्षीय प्रशिक्षण कार्यक्रम को संचालित करने को कहा गया है।

15.5 2030 तक बहुविष्यक उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा प्रदान 4 वर्षीय एकीकृत बीएड कार्यक्रम स्कूली शिक्षकों के लिए न्यूनतम डिग्री योग्यता बन जायेगा 1 आधुनिक शास्त्र इतिहास विज्ञान मनोविज्ञान भारत से जुड़े ज्ञान और इसके मूल्यों लोकाचार आदि शामिल होगा ।

15.7 पूर्व सेवा शिक्षा कार्यक्रमों में प्रवेश हेतु एनटीए परीक्षा आयोजित होगी।

15.8. शिक्षा संकाय प्रोफाइल में विविधता आवश्यक होगी।

15.9 पीएचडी प्रवेश कर्ताओं द्वारा क्रेडिट आधारित पाठ्यक्रम।

15.10 स्वयं दीक्षा प्लेट फार्म का प्रयोग करें प्रशिक्षण हेतु।

15.11 मेंटरिंग के लिए राष्ट्रीय मिशन स्थापित किया जाएगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षक की भूमिका : -

समग्र विकास - छात्रों के संज्ञानात्मक भावात्मक सामाजिक शारारिक विकास कर सकें ।

फैसिलिटेशन और मेंटरशिप – लेक्चर की बजाय रचनात्मक जिज्ञासा सोच को बढ़ावा।

डिजिटल साक्षरता - प्रौद्योगिकी में कुशल हो ।

बहुविषयक दृष्टिकोण– विभिन्न विषयों का एकीकृत करना में कुशल हो ।

सतत व्यवसायिक विकास – खुद सीखते रहें ।

स्थानीय संदर्भ – स्थानीय संस्कृति से शिक्षक परिचित हो ।

निष्कर्ष :– राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा प्रणाली को बदलने में शिक्षकों की भूमिका पर महत्वपूर्ण जोर देती है जिससे अध्यापक का महत्त्व, प्रभाव तथा सम्मान पुन: लौट पाए और अध्यापक को राष्ट्र निर्माता कहा जा सके । जिससे वह अगली पीढ़ी को आकार दे सके ।

सन्दर्भ :-

01.भट्टाचार्य जी सी , अध्यापक शिक्षा, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा 2016

02. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

03. राजस्थान पत्रिका , जयपुर, राजस्थान, जुलाई 2023

04. दैनिक भास्कर, जयपुर, राजस्थान, जुलाई 2023

05 कुमार नरेश (2016) अध्यापक शिक्षा , हिंदी बुक सेंटर दिल्ली

06. शर्मा एवं सत्संगी ,(2019) श्री विनोद पुस्तक मंदिर आगरा

07 Sharma R.A (2002) Teacher Education ,Royal Lal Book Depot , Merut , UP

08. Trivedi R.S (1969) Reading in Teacher Education , Sardar Patel University

09.Trbble J.W (1991) Future of Teacher Education, London , Roubledge and Kogan Paul.

10. Pandey B.N.(1975) Secondary Teacher Education Curriculum , Dept.of Education , NCERT ,New Delhi